मनोवृत्ति अथवा अभिवृत्ति
Attitude

मनोवृत्ति अथवा अभिवृत्ति एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग हम अपने सामान्य जीवन में सदैव ही करते हैं सच तो यह है कि हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जिससे सम्बन्धित हमारी कोई विशेष मनोवृत्ति न होती हो। मनोवृत्ति का सम्बन्ध किसी विशेष परिस्थिति, वस्तु, व्यक्ति अथवा तथ्य के प्रति हमारे एक विशेष दृष्टिकोण, विचार अथवा अनुभूति से होने के कारण इसे एक मनोवैज्ञानिक तथ्य माना जाता है। इस दृष्टिकोण से मनोवृत्ति को व्यक्ति की मानसिक प्रतिछाया कहा जा सकता है। समाज के विभिन्न वर्गों, प्रथाओं, नियमों तथा विभिन्न व्यक्तियों के प्रति अपने-अपने अनुभवों के आधार पर व्यक्तियों की अलग अलग मनोवृत्तियों में परिवर्तन भी होता रहता है। स्पष्ट है कि मनोवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसे देखा नहीं जा सकता लेकिन तो भी सामाजिक अन्तक्रियाओं को प्रभावित करने में इनका विशेष योगदान होता है। यही कारण है कि नियोजित परिवर्तन युग में सरकार जनता की मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाकर विकास कार्यक्रमों को सफल बनाने का प्रयत्न करती है।

गिडिंग्स तथा अनेक दूसरे समाजशास्त्रियों ने इस बात पर बल दिया कि मनुष्य की मनोवृत्तियों अथवा अभिवृत्तियों को समझकर ही उसके वास्तविक व्यवहारों का मूल्यांकन किया जा सकता है। जब एक पृथक विषय के रूप में सामाजिक मनोविज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ तब सामाजिक मनोवृत्तियों को इसके अध्ययन का मूलभूत केन्द्र स्वीकार किया जाने लगा। इस समय से अधिकांश समाज मनोवैज्ञानिक यह स्वीकार करने लगे कि मानव व्यवहारों की व्याख्या मूलप्रवृत्तियों के आधार पर नहीं की जा सकती। मूलप्रवृत्तियाँ केवल एक उपकल्पना है जबकि मनोवृत्ति एक वास्तविक तथ्य है जिनका वर्गीकरण किया जा सकता है तथा जिनकी माप भी की जा सकती है। इसी आधार पर आज सामाजिक

मनोवृत्तियों के अध्ययन को समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।

[illegible]

मनोवृत्ति व्यक्ति के मन की एक विशिष्ट दशा है जिसके आधार पर व्यक्ति विभिन्न तथ्यों अथवा परिस्थितियों का मूल्यांकन करता है, उनके प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल विचार विकसित करता है तथा अपने व्यवहार की सीमाओं का निर्धारण करता है। इसे हम मनोवृत्ति का संज्ञानात्मक पक्ष, भाव-पक्ष तथा व्यवहार-पक्ष कह सकते हैं। यदि इन तीनों का समन्वय करते हुए मनोवृत्ति के अर्थ को स्पष्ट किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि मनोवृत्ति व्यक्ति का वह मनोभाव है जो किसी विशेष वस्तु अथवा परिस्थिति के प्रति उसके झुकाव, विचारों तथा व्यवहारों को स्पष्ट करता है। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अधिकांश सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक पक्ष और भाव-पक्ष को ध्यान में रखते हुए ही इसे परिभाषित किया है। जबकि व्यवहार पक्ष के आधार पर दी गयी परिभाषाओं को उतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता।

⇒ एडवर्डस के अनुसार – किसी मनोवैज्ञानिक तथ्य से सम्बन्धित सकारात्मक अथवा नकारात्मक मनोभाव की मात्रा को ही मनोवृत्ति कहा जाता है।

स्पष्ट है कि जिन तथ्यों का सम्बन्ध हमारी मानसिकता से होता है, उनके प्रति व्यक्ति के अनुकूल अथवा प्रतिकूल मनोभाव को ही उसकी मनोवृत्ति कहा जा सकता है।

⇒ गोर्डन → ने संज्ञानात्मक पक्ष पर जोर देते हुए बोला – किसी विशिष्ट तथ्य के प्रति एक विशेष रूप में व्यवहार करने की प्रवृत्ति को ही मनोवृत्ति कहा जाता है।

AUGUST
SEPTEMBER

August 2018
Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11
12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25
26 27 28 29 30 31

⇒ ऑलपोर्ट → किसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में सोचने अनुभव करने तथा उसके प्रति एक विशेष ढंग से व्यवहार करने की मानसिकता तत्परता को ही हम उसकी मनोवृत्ति कहते हैं।

⇒ क्रच तथा क्रचफील्ड ने मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक पक्ष, भाव-पक्ष तथा व्यवहार-पक्ष का समन्वय करते हुए लिखा है:- मनोवृत्ति को प्रेरणाओं, संवेगों प्रत्यक्ष बोध्य तथा ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के उस स्थायी संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित होता है।

इस परिभाषा के अनुसार मनोवृत्ति एक ऐसी मानसिक दशा है जिसमें अनेक प्रेरणाओं, संवेगों, प्रत्यक्ष-बोध्य तथा ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का समावेश होता है।

प्रेरणाएँ वह विशेषता है जो एक विशेष परिस्थिति में व्यक्ति को किसी विशेष कार्य की उत्तेजना प्रदान करती है। संवेग व्यक्ति में किसी वस्तु अथवा तथ्य के प्रति दया, प्रेम, घृणा अथवा भय आदि की दशा उत्पन्न करते हैं। प्रत्यक्ष बोध्य अथवा प्रत्यक्षीकरण एक ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति में अपने अनुभवों के आधार पर मन में कुछ आकृतियाँ बनाकर एक विशेष निर्णय लेने लगता है। ज्ञानात्मक प्रक्रिया इस दशा की ओर संकेत करती है जिसमें ज्ञान और अनुभव के साथ व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन होता रहता है। इन सभी विशेषताओं के समन्वय से किसी चीज के प्रति व्यक्ति के जिस मानसिक झुकाव का निर्माण होता है, उसी को हम व्यक्ति की मनोवृत्ति कहते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मनोवृत्ति की प्रकृति को इसके तीन निर्माणक पक्षों अथवा अवयवों के आधार पर सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

यह तीन अवयव हैं– संज्ञानात्मक, भावनात्मक, तथा व्यवहारात्मक। संज्ञानात्मक पक्ष अथवा संज्ञानात्मक अवयव का सम्बन्ध इसके वैचारिक या अवधारणात्मक पक्ष से है। यह व्यक्ति के चिन्तन में निहित होता है। भावनात्मक अवयव का सम्बन्ध मनोवृत्ति के उस पक्ष से है जो किसी तथ्य के प्रति व्यक्ति के संवेगों अथवा भावनाओं को व्यक्त करता है। यह अवयव किसी विशेष मनोवृत्ति को उत्तेजित और प्रेरित करता है। इसीलिए अनेक मनोवैज्ञानिक इस अवयव को मनोवृत्ति का केन्द्र मानते हैं। जब हम किसी विशेष तथ्य के सम्बन्धित व्यक्ति की मनोवृत्ति का माप करने का प्रयत्न करते हैं तब मनोवृत्ति की इस भावनात्मक मात्रा को ही ज्ञात करने का प्रयत्न किया जाता है। व्यवहारात्मक अवयव किसी विशेष तथ्य के प्रति व्यक्ति द्वारा एक विशेष ढंग से व्यवहार करने की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करता है। व्यवहार की यह प्रवृत्ति सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। सकारात्मक प्रवृत्ति अनुकूल व्यवहार की प्रेरणा देती है जबकि नकारात्मक प्रवृत्ति प्रतिकूल व्यवहारों में स्पष्ट होती है।